'गुप्तजी द्विवेदीयुग के कवि है। द्विवेदीयुग सुधारवादी युग था, अत: गुप्तजी की शैली में उपदेशात्मकता का आ जाना स्वाभाविक ही है।' इस युग के खण्डकाव्योंमे भारतीय जनता में पराधीनता से मुक्ति पाने की छटपटाहट पैदा की। द्विवेदी युगमें लिखे गये खण्डकाव्योंके वर्ण्यविषय ऐसे पौराणिक ऐतिहासिक और काल्पनिक आख्यान है, जो लोगोमें अत्याचार और अन्याय के प्रति आक्रोश और देशप्रेम का उदय कर उसे अपने अधिकार और कर्तव्य के प्रति सजग करते है। इस युग के खण्डकाव्योंने घटनाओं और तथ्यों के उल्लेख व्दारा आदर्श प्रस्तुत करके उपदेश और प्रेरणा देने की प्रवृत्तिने इन काव्योंमे इतिवृत्तात्मकता को स्थान दिया। द्विवेदीयुग में कुछ खण्डकाव्य लिखे गये इनका कथासुत्र अत्यत क्षीण है, और काव्य की भाषा खडी बोली है।

'यशोधरा प्रेमाख्यानक खण्डकाव्य है। खण्डकाव्य में किसी भी व्यक्ति जीवन का कोई अंश वर्णित होता है, पुरी जीवनगाथा नही, इसीतरह "यशोधरा" की कथावस्तु इतिहासप्रसिध्द सिध्दार्थ के महानिष्क्रमणसे सम्बधित है। यशोधरा में मुख्यत: विप्रलम्भ शृंगार, वात्सल्य और शान्त रसोंकी नियोजना हुई है। गुप्तजीने "यशोधरा" में प्रकृति के अनेक दृश्यों को यथावत् रूपमें उतार दिया है।'

' यशोधरा एक चरित्र प्रधान काव्य है। इस काव्य की रचना उपेक्षिता यशोधरा के चरित्र को उँचा उठाने के लिए हुई है। काव्य के नामकरण से भी सिध्द है कि यशोधरा ही इस काव्य की प्रमुख पात्र है। " यशोधरा के सृजन की मूल प्रेरक शक्ति कवि की काव्य में उपेक्षिताओं के प्रति वह सहानुभूति ही है, जिसकी प्रेरणासे साकेत की रचना हुई है।"[१]

१] मिश्र रामप्रसाद - चार महाकवियोंके विरहकाव्य - पृ.६४

[SHIVAJI] UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

यशोधरा काव्य का प्रकाशन साकेत के लगभग एक वर्ष पश्चात संवत १९८६ में हुआ । यशोधरा का उद्देश्य है पति-परित्यक्ता यशोधरा के हार्दिक दुःख की व्यंजना तथा वैष्णव सिध्दान्तों की स्थापना है । "यशोधरा" नायिका प्रधान काव्य है । "यशोधरा" का रचनाकाल छायावादी युग होने के कारण रचना-शिल्प पर उसका प्रभाव पडा है ।

"यशोधरा" राहुल जननी गोपा के महान त्याग की कहानी है । प्रमुख रूपसे "यशोधरा" में चरित्र-चित्रण चार पात्रों का ही हुआ है, सिध्दार्थ, यशोधरा, शुध्दोदन और राहुल । शेष पात्र मात्र संकेत है, जिनमें नन्द, महाप्रजावती, पुरजन छन्दक, कन्थक आदि आते है । "यशोधरा" में गीत, कविता, गदय, पदय, तुकान्त-अनुकान्त सभी तो है । यशोधरा के महात्याग का उद्घाटन करना और इसके माध्यमसे नारी जाति का उचित गौरव करना कवि का उद्देश्य है ।

"यशोधरा" कवि गुप्तजी द्वारा लिखे गये काव्यग्रन्थों में अपने ढंग का अकेला काव्य है किंतु साकेतकाव्य गुप्तजीका श्रेष्ठ माना गया है और यशोधरा काव्य उसके प्रभाव में लिखा गया है फिर भी काव्य का अपना विशेष महत्त्व है । साकेत का महत्त्व साकेत के नवम सर्ग के कारण है, और इस नवम सर्ग में आँसू ही बहाये गये है । गुप्तजी अपने दृष्टिकोण से अपनी काव्यकला का प्रयोग करने परभी उर्मिला के विरह को वे पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर पाये इसीकारण एक विरहिणी की व्यथा को देख उनका ध्यान दूसरी विरहिनीकी ओर चला गया । "साकेत" रामराज्य होनेपर के कारण उर्मिला को चाहनेपर भी महत्त्वपूर्ण स्थान नही मिल सका । इसलिए कवि अपने हृदय में यह अनुभव करते रहे कि विरह वर्णन अधूरा रह गया ।

ऐसी स्थिति में कवि का ध्यान उर्मिला से हटकर यशोधरा की ओर गया, और साकेत की उर्मिला की अपेक्षा यशोधरा अधिक उदात्त है ।

यशोधरा की स्थिति और उर्मिला की स्थिति में भेद है । उर्मिला के विरह का कारण लक्ष्मण का वनगमन अवश्य है किन्तु उपरोक्त में भातृ-भक्ति का कारण ही मुख्य रहा है । यशोधरा को तो पुत्र राहुल होनेपरभी पति सिध्दार्थव्दारा त्याग का, दुख देखना पडा । यशोधरा हतप्रभ होकर पुत्र को हृदयसे चिपटाकर रह गई । इसके कारणसेही यशोधरा का विरह सहज ही जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है ।

शास्त्रीय दृष्टिसे कथावस्तु के तीन भेद होते है ।

१] प्रख्यात

२] मिश्रित

३] उत्पादय

यशोधरा की कथावस्तु प्रथम कोटी में आती है क्योंकि सिध्दार्थ का आख्यान साहित्य में चिरकालसे काव्य का विषय बनता आ रहा है । मैथिलीशरण गुप्तजीने इसमें मौलिक उद्भावनाएँ अवश्य की हैं, किंतु कथानक प्राय: ज्यों का त्यों अपनाया है । कवि गुप्तजीने "यशोधरा" में यशोधरा के चरित्रांकन पर विशेष बल दिया है, किंतु यशोधरा के बारे में अन्य साहित्यकारोंने प्राय: उपेक्षा का ही दृष्टिकोण अपनाया है, इसलिए इस दृष्टिसे यशोधरा के कथानक को मिश्रित कथानक की श्रेणी में स्थान देना उचित है । आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयीने गुप्तजीकी कथा प्रबंध प्रवृत्तिपर लिखा है कि - " उनके निर्माण में प्रौढता भी आई परन्तु अतिरिक्त भावनामयता का प्रभाव बना ही रहा । यशोधरा के चित्रण में गृहिणी के आदर्श का सुन्दर निरूपण है, परंतु न तो इसका

काव्य विधान ही व्यवस्थित है - कहीं गीत, कहीं नाट्य, कहीं गद्य जुड़े हुए है । और न चरित्र - निर्देश की रेखाएँ ही पुष्ट है । सारा आख्यान एक करुण सात्विक और सजीव भावना का निर्देश मात्र करता है । नारी के व्यक्तित्व निर्माण की अपेक्षा करुणा का प्रभाव ही प्रमुख बन गया "[१]

यशोधरा का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त है । इसकी रचना मूलत: उपेक्षिता यशोधरा के महत्व की प्रतिष्ठा के लिए की गयी है । यशोधरामें वियोगिनी यशोधरा की कथा दो प्रमुखता देकर बुध्द के वनगमन और ज्ञान प्राप्त करने आदि के प्रसगों का वर्णन किया गया है । यशोधरा को किंचित परिवर्तन के साथ कुछ आधुनिक रुप देकर प्रस्तुत किया है ।

यशोधरा कृति का आरम्भ मंगलाचरण से करके, कवि गुप्तजीने प्रथम सर्ग " सिध्दार्थ " किया है, जिसकी आरम्भिक पंक्तियों में सिध्दार्थ के अन्तर्मन में चलनेवाले संघर्ष का अंकन किया गया है कि संसारमें मृत्यु का कैसा भयंकर चक्र चल रहा है, संसार से ही प्राणियों की आत्मारुपी नवनीत को तो अपहृत कर ले जाता है, जबकि उनका शरीर यही पडा रहा जाता है ।

सिध्दार्थ को समझ नहीं आता कि जब मानव दूसरे मानवों को रोगी, वृध्द और जर्जर काया होते देखते हैं, फिर भी वो इस भयंकर मृत्यूचक्रसे परिमाण पाने का कोई उपाय क्यों नहीं सोचते? सिध्दार्थ की समझ में यह नहीं आता कि मानव सौंदर्य क्या -

" रिक्त मात्र है क्या सब भीतर, बाहर भरा भरा । "

---

१) सं.वीरेन्द्रकुमार बडसुवाला - यशोधरा काव्यसंदर्भ - पृ. १५३

सिध्दार्थ संसार के विषय में सोचते है कि वे इस तथ्य को क्यों नहीं समझ पाते कि उनकी स्थिति बलिपशु जैसी है, सैकडों प्रकार के रोग दानव उनके भक्षण को तत्पर रहते है । सिध्दार्थ ऐसे वृध्द पुरुष को देखकर जिसके अंगप्रत्यंग गल चुके थे, कमर झुक गयी थी, कपोल पिचड गये थे, आँखे धंस गयी थीं, और जो जीवित कंकाल प्रतीत होता था, इस चिंतामें सिध्दार्थ मग्न हो उठते है -

" हो जावेगी क्या ऐसी ही मेरी यशोधरा१
हाय । मिलेगा मिट्टी में यह वर्ण सुवर्ण खरा१
सूख जायगा मेरा उपवन जो है आज हरा १"

जब सिध्दार्थ देखकर अनुभव करते हैं कि रोगों, वार्धक्य और मृत्यु का सभी जगवासियोंपर आक्रमण होता है, उनके आक्रमणसे कोई भी नहीं बचता, तो वे अपनी यशोधरा तथा देशवासियों को इस भयावह स्थिति में बारबार पडने से बचाने की कामना से विश्व की नश्वरता को परिलक्षित करके उससे " ओ क्षणभंगुर रामराम" कहते हुए यह निश्चय कर लेते है -

" अमृतपुत्र उठ कुछ उपाय कर,चल चुप हार न बैठ हाय ।
खोजरहा है क्या सहाय तू१ मेरा आप ही अन्तराय१"

और वे सांसरिक भोगों को यह कहकर तिलांजलि देते हुए कि -

" पडी रह तू मेरी भव भुक्ति ।
मुक्ति हेतु जाता हूँ यह मैं, मुक्ति मुक्ति बस मुक्ति ।"

गृहत्याग का संकल्प कर लेते हैं ।

"महाभिनिष्क्रमण" शीर्षक सर्ग में गृहत्याग से पूर्व सिध्दार्थ के मनमें उठनेवाले इस द्वन्द्वभाव का कि माता-पिता और पत्नी आदि से मुक्ति

हेतु जाने के लिए अनुज्ञा लेनी चाहीए अथवा नहीं, इसका चित्रांकन किया गया है । नश्वर संसार को त्यागते हुए अपने माता-पिता के लिए कहते हैं - हे मेरे महान माता पिता । मैं इस नश्वर जगत को त्यागकर तुमसे विदा ले रहा हूँ । मुझे क्षमा करना, मेरे प्रयाणपर तुम दु:ख मत करना । मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे जानेपर मंगलगीत गाओ और प्रत्येक ग्राममें आनन्दोत्सव मनाय जाय ।

सिध्दार्थ अपने सौतेले भाई नन्द से आशा करते है कि वह उनके रिक्त स्थानकीपूर्ति करते हुए उनके गृह निष्क्रमण को बुरा न मानेगा । यशोधरा और स्वपुत्र राहुल को देखकर उनका मन एकबार को विचलित होता है कि वे उसे जगाकर उससे अपने गृहत्याग का रहस्य अनावृत्त कर दें किंतु तभी उन्हें नारी के बाधामय स्वरूप की स्मृति आ जाती है और वे उसे जगाते नहीं ।

सोते हुए पुत्र राहुल को वे यह समाश्वासन दे जाते है कि मै जबतक मोक्ष-मार्ग प्राप्त करके लौटता हूँ तबतक अपनी माता को ही माता और पिता समझना । इसप्रकार स्वजनों के ममत्व भावसे मुक्त होकर वे छन्दक को अश्वसज्जित करने का आदेश देते हैं और भगवान राम को यह कहकर स्मरण करते हुए कि आपका वंशज गृहत्याग कर जा रहा है, अत: उसे आशीर्वाद प्रदान कीजिए, रात्रिमें ही गृहत्याग कर देते हैं ।

"यशोधरा" सर्ग में यशोधराव्दारा स्वप्न में सिध्दार्थ को गृहत्याग करते देखने और जागनेपर स्वप्न को सत्य में परिणत हुआ, देखकर आत्मक्रन्दन करने का चित्रांकन किया गया है । उसे उन विगत् घटनाओंकी स्मृति आने लगती है, जिनसे यह पूर्वाभास मिलता था कि सिध्दार्थ किसी न किसी दिवस गृहत्याग करके संन्यास ले लेंगे और वह सखी से कहती है स्वामी के वीतरागी हो जाने का सन्देह पहले ही था, वह सन्देह आज सत्य रूपमें सामने आ गया ।

पतिव्रता यशोधरा सिध्दार्थ की अनुपस्थितीमें शृंगार करना छोड देती है । उसको इस तथ्य के विषय में बडा अनुताप है कि सिध्दार्थने गृहत्याग के समय मुझसे परामर्श क्यों नहीं किया? उन्होंने मुझे भोग की प्रतारिका अथवा मार्ग का रोडा ही क्यों समझा? अंतमे यशोधरा अपने मनको यह सहकर सात्वना देती है कि प्रियतमने मेरी जो अवहेलना की है, मुझसे जो परामर्श नहीं लिया है, उसका मूल कारण सहृदयता ही है क्योंकि उन्हें यह आशंका रही होगी कि यदि मैं यशोधरा से इस विषय में परामर्श करूगाँ तो यह तो संभव है कि वह मुझे जाने की अनुमति प्रदान कर दे किन्तु मेरे जाते समय वह रुदन अवश्य करेगी । इसलिए यशोधरा कहने लगती है कि आज तो मैं उनका पहले से भी अधिक सम्मान करने लगी हूँ उन्हें उपालम्भ देना नहीं चाहती हूँ किंतु वह यह तथ्य भी स्पष्ट कर देती है कि कदाचित मैं उनका गाकर स्वागत नही कर सकूंगी, क्योंकी वे मुझसे बिना परामर्श लिए गये हैं।

यशोधरा को यह आत्मविश्वास और स्वाभिमान है कि प्रियतम चाहे जहाँ चले गए हों, मेरे विश्वास उन्हें अवश्य ही गृह की ओर खींच लायेंगे-

" यशोधरा क्या कहे और अब, रहो कहीं भी छाये,
मेरे ये निःश्वास व्यर्थ यदि तुमको खींच न लाये ।"

इसकेबाद नन्द, महाप्रजावती, शुध्दोदन और पुरजन शीर्षकों में क्रमशः इन्हीं अंतर्मंथन का चित्रांकन किया गया है । सिध्दार्थ के गृहत्याग की वार्ता को सुनकर होनेवाली मनोदशाका अंकन करते हुए गुप्तजीने नन्द के मुख से यह भाव व्यक्त कराया है कि तपस्या हेतु तो मुझे जाना चाहिए था जबकि आप मेरे दुर्बल कन्धोंपर राहुल की परवरिश और राजकार्य की देखरेख का दुर्वह भार डाल गए हैं । महाप्रजावती की दुश्चिंता का प्रमुख कारण उनकी यह विचिकित्सा

है कि कहीं यह प्रवाद न फैलजाय कि मैंने कैकयी की भाँति सौतेले पुत्र को गृहसे निष्कासित कह दिया है । महाराज यह सोचते हुए पश्चाताप करते है कि मैंने उसको वश मे रखने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न किये थे, किन्तु दुर्भाग्य वश से सभी विफल हो गये । शुध्दोदन राजपाट और धरा-धाम की निन्दा करते हुए पुत्र की महत्ता स्वीकार करते हैं, किन्तु पितृ हृदय यह कैसे कह सकता है कि मेरे पुत्रद्वारा संन्यास ग्रहण करना एक भला कृत्य है ।

शुध्दोदन पुत्रवधू के बारे में चिन्तातुर है, कि मेरी पुत्रवधूपर दैव-दुर्विपाक से अचानक ही यह विपत्ति का पर्वत टूट पडा है, हाँ उससे संवाद करके और उसे धैर्य शील पाकर उन्हें कुछ राहत अवश्य मिलती है । पुत्र शोक में वे ऐसे अधीर और भाव-विव्हल हो उठते है कि पुत्रवधू यशोधरा को कहना पडता है ।

" उनसे भी भोला तुम्हें देखती हूँ हाय मैं । "

सिध्दार्थ के वियोग में क्रन्दन करते हुए पुरजन अपने दुर्भाग्य की आयोध्या-वासी उन पुरजनों के दुर्भाग्य से तुलना करते है, जिन्हे राम, सिध्दार्थ की भाँति ही रोते कलपते, छोड गये थे । उनकी दृष्टि में सिध्दार्थ की अनुपस्थितिमें कपिलवस्तु का राज्य मिट्टी में मिला प्रतीत होता है । जब वे छन्दक को शून्य पृष्ठ अश्व कन्थक के साथ आते देखते हैं, तो उनकी सिध्दार्थ के प्रत्यागमन की समस्त आशा आकाक्षांएँ धूलिसात हो जाती है ।

तदनन्तर छन्दक उन्हें अवरुध्द कण्ठ से यह संवाद सुनाता है कि आर्य सिध्दार्थ तो योगभ्रष्ट तपस्वी थे, जिनके अन्तर्मन में अपनी तपस्या की पूर्ण करने की धुन समायी हुई थी और वे अंतमे संन्यास लेकर तदर्थ-गृहत्याग कर गये हैं। अपने श्यामल केश भी काट दिए है हाँ उन्होने आप सबके लिए यह सन्देश भेजा है -

" करे न कोई मेरी चिन्ता, नहीं मुझे भय क्लेश,
सिध्दि लाभ करके मैं फिर भी लौटूगाँ निज देश ।"

यशोधरा जब यह सुनती है कि सिध्दार्थने केश काट डाले है, उसी तरह यशोधरा भी केश काट डालती है और तपस्विनियों जैसे वेशमें रहने लगती है । यशोधरा को फिर पश्चाताप होता है गा - बजाकर सिध्दार्थ को विदा करने का सुअवसर नहीं पा सकी। यशोधरा कहती है कि अपने प्रियतम के मनमें ऐसे विचार आने क्यों दिए कि मैं उनके अभिष्ट में बाधक बनकर उन्हें आने से रोक लुंगी । इसके बाद विगत स्मृतियाँ यशोधरा के हृदय को सालने लगती है कि मेरे पिताने मेरे लिए धीरें - वीर वर की प्राप्ति की कामना से जो प्रतियोगिता आयोजित की थी, उसमें वे शरसन्धान और अश्वारोहण आदि कृत्योंमें किसप्रकार सर्वोत्तम प्रतियोगी सिध्द हुए थे ।

परन्तु यशोधरा को यह सोचकर बडा आत्मभिमान लगता है कि मुझे स्त्री को तो उन्होने त्याग दिया है, किन्तु सिध्दार्थ जिसकी खोज में गये है, वह मोक्ष भी तो स्त्री है।

" है नारीत्व मुक्ति में भी तो अहो विरक्ति - विहारी ।
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी । "

किन्तु यशोधरा को इस बातपर नाज है कि मैं भी विश्व के अंधे भावों का चाहे शुभ हो अथवा अशुभ प्रतिनिधित्व करती हूँ, संसार की आधी संख्या स्त्रियोंकी है । उसे यह भी विश्वास है कि मेरे भक्तिभावसे खिंचकर उन्हें गृह लौटना ही पडेगा ।

कवि गुप्तजीने इसके आगे कवि परिपाटी के अनुसार विरह की दस दशाओं का चित्रांकन किया है । इसके बाद घुमा फिराकर पुन: यशोधरा की दशा

का ही वर्णन करने लगता है ।

सिध्दार्थ गृहत्याग किए कई साल व्यतीत हो चुका है, इस तथ्य की सूचना इस तथ्य के व्दारा दिलाने गयी है - फलो के बीजोंसे पुन: वृक्ष बनकर, फल आने लगे है, किन्तु अभीतक सिध्दार्थ नहीं लौटे राहूल सयाना होने के कारण सिध्दार्थ का स्मरण करता हुआ रोने लगता है । यशोधरा निश्चय व्यक्त करती है कि सिध्दार्थ के लिए मेरे पास खारे अश्रूही समर्पित करने को है, जब की तुझे मैं क्षीर पिलाकर पालूँगी । चाहे संसार मुझे पक्षपातिनी कहता रहे ।

यशोधरा को यह आशंका होने लगती है कि मेरी जीर्ण - शीर्ण जीवन तरी, कहीं प्रियतम के गृह -प्रत्यागमन से पूर्व ही जलमग्न हो जाय - मेरी इहलीला समाप्त न हो जाय -

" जीर्ण तरी, भरि भार देख, अरी एरी ।
कठिन पन्थ दूर पार, और यह अँधेरी । "

यदयापि यशोधरा पति- प्रत्यागमन की अवधितक अपनी जीवन-तरी को किसी न किसी प्रकार खेना ही चाहती है, जिससे वह राहुलरूपी थाती को पति को सौंप सकें ।

विरहीनी यशोधरा को राहुलरूपी खिलौना ही मन बहलाने को रह जाता है, अत: वह उसकी क्रिडाओं में मग्न होकर अपनी वियोगावस्था की विषय वेदना को विस्मृत करने का प्रयास करती है । सयाने राहुल को यशोधरा कहानीयाँ सुनाती है । यशोधरा की कहानी में हनुमानव्दारा भोग बनसे उडने का प्रसंग आता है तो उसीवक्त ही राहुल योगसाधना की इच्छा है कि मै पक्षीयों की तरह उडता हुआ वन-उपवनों को छानकर यह

पता लगाने की चेष्टा करगाँ की पिताजी कहाँपर तपस्या कर रहे हैं देवदत्तव्दारा हंसपर शर:सन्धान और सिध्दार्थव्दारा उसकी रक्षा करने के प्रसंग से उत्पन्न इस समस्या का, कि उसपर घातक और रक्षक में से किसका स्वामित्व होना चाहीए। राहुल का भी मन जानती है और सुनकर प्रभुरित हो उठती है ।

राहुल को लोरी सुनाकर सुनाकर सुलाने के अनन्तर रात्री की शून्य भयावहता में यशोधरा अपने दुर्भाग्यपर अश्रु प्रवाहित करने लगती है । यशोधरा अपनी वज्र हृदयता को यह कहकर कोसती है कि प्रकृति के नाना उपादोनों का मेरे प्राणेश्वर के वियोग में हृदय फट रहा है, परन्तु मुझ हतभागिनी का हृदय नहीं फटता ।

इसके बाद कवि गुप्तजीने राहुल की बाते और उसकी क्रिडाएँ चित्रित की गयी है ; यशोधरा का वह अपना एक स्वप्न भी सुनाता है, जिसमें वह अपने पिता को गोदमें मेघश्यावक लिए देखना यशोधरा अपनी मनोकामना इन शब्दों में व्यक्त करती है –

बस, मैं ऐसी ही निभ जाऊँ ।
राहुल निज रानीपन देकर
तेरी चिर परिचर्या पाऊँ ।
तेरी जननी कहरवाऊँ तो
इस परवश मन को बहलाऊँ ।

तदनन्तर कवि गुप्तजीने यशोधरा, राहुल गंगा, गौतमी दासियाँ के मध्य छोटीसी गदय नाटिका की, योजना की है । यशोधरा सखियों से बातचीत के प्रसंग में पति परित्यक्ता सीता और श्रीकृष्ण के वियोग में

तडपनेवाली गोपीयों को सश्रुध्द प्रणाम करती हुई यशोधरा कहती है कि कदाचित मैं उतने कष्ट नही झेल पाती । जब गौतमी यह कह उठती है " निर्दयी पुरुषों के पाले पडकर हम अबला जनों के भाग्य में रोना ही लिखा है।" इस समय यशोधरा कहती है कि फिर - पतंगो को भी दु:खी न देख सकनेवाले प्राणेश्वर को तु निर्दय कैसे कह सकती है । सिध्दार्थ तो हम सबके सच्चे सुख की खोज में गये हैं । गौतमी इसकेबाद प्रश्न करती है क्या राहुल के पालन - पोषण और शिक्षा - दीक्षा का भार उन्हें नही संभालना चाहिए था? यशोधरा उत्तरदेती है कि राहुल के जन्मनेही अमृत की प्राप्ति के लिए और भी आतुर कर दिया था । इस दृश्य के व्दारा यशोधरा पुत्र कल्याणांक्षी, वात्सल्यभाव की झलक दिखायी देती है कि राहुल के प्रणाम करने से पूर्व ही उसपर शुभ आशीर्वादों की वर्षा करने लगती है । इसीमें एक राहुल के मेधावी होने के तथ्य का एक परिचायक प्रसंग भी है । राहुल खीर, मोतीचूर, दालभात, श्रीखंड, पापड और दही बडे भोज्य सामग्री की परित्याग कर रखा है और यशोधरा उपवास करती हुई फलों और दुध का सेवन करके ही जीवनयापित कर रही है। राहुल के आग्रहपर उसे सिध्दार्थ का राजसी वेश-भूषा का चित्र दिखाया जाता है । उसी वक्त ही यशोधरा अश्रुप्रवाह को नही रोक पाती । शुध्दोदन व्दारा बनवायी गयी वीणा राहुल के लिए लायी जाती है । और राहुल यशोधरा से वीणा बजाते हुए कुछ गाने का आग्रह करने लगता है, जिससे विवश होकर वह प्रस्तुत कृतिका यह मार्मिक गीत सुनाती है -

" रुदन का हँसना ही तो गाना
गा गाकर रोती है मेरी कृतंली भी ताना । "

राहुल पिता को पत्र लिखकर यह निवेदन करने की कामना व्यक्त करता है -

" आओ यहाँ अथवा बुला लो हमको वहाँ । "

यशोधरा का कथन है कि जब हमें यही ज्ञात नहीं है कि वे कहाँ है, तो पत्र कैसे लिखा जा सकता है । राहुल को मालुम होता है, कि सिध्दार्थ माता की अनुमति लेकर अथवा जाने के विषयमें सूचना देकर नहीं गये है । यशोधराने राहुलको नल दमयन्ती का आख्यान सुनाया था, अत: उसको स्मरण करता हुआ वह यशोधरा को यह परामर्श देता है कि तुमभी हँस के माध्यमसे अपनी कथाओंकी सूचना पिताजीतक क्यों नहीं पहुँचा देती? यशोधरा के यह कहनेपर कि हंस कहाँ मिल सकता है? राहुल को कीर बताता हुआ उसका दूत बनकर जाने की कामना व्यक्त करता है?

सिध्द के विषयमें राहुल की कल्पना है कि क्या वह घरबार को छोडकर जानेपरही मिलती है? यशोधरा के इस उत्तर से उसकी संतुष्टि नही हो पाती कि बेटा यहा विघ्न, उन्हें हम सब घेरेंगे, क्योंकि उसके अनुसार मनमें भी तो अनेक विष बाधाएँ साधक को पथभ्रष्ट करने का प्रयास करती है । मोक्ष के स्थानपर वैष्णवधर्म की मान्यताओं के अनुसार बारबार जन्म लेता और भगवान विष्णु के अवतारों की नाम रूप गुण और लीलाओं के मनन - श्रवण प्रेक्षण के लाभ को अधिक महत्त्वपुर्ण सिध्द करती है ।

इसके बाद यशोधरा अपने मोक्षकामी पति के भी विषयमें भावना व्यक्त करती है। यशोधराद्वारा स्वप्न में तपोजर्जरकाय महात्माबुध्द को तपोरत देखने का चित्रांकन किया है ।

रोहिणी नदी को देखकर यशोधरा की अपने पतिविषयक विगत-स्मृतियाँ सजग हो उठती है और वह उससे सखी भाव स्थापित करते हुए उन्हें

यह सन्देश भिजवाने की इच्छा व्यक्त करती है -

" कह देना इतना ही उनसे जब उनको पहचान ले,
धाय तुम्हारे सुत की गोपा बैठी है बस ध्यान ले ।"

राहुल यशोधरा के मुख से बारबार यह सुन चुका है कि पिता मोक्ष की प्राप्ति के लिये गये है । राहुल को यह समझ में नहीं आता कि उन्हें इतना दिर्घकाल क्यों लग रहा है? राहुल के सानिध्य में अपनी कथाओं को विस्मृत करती हुई यशोधरा अपने दिन तो काटती है, तथापि उसे अपने प्रियतम की स्मृति बारबार करती रहती है ।

तदनन्तर यशोधरा को गौतमी से सिध्दार्थ के प्रत्यागमन की सुचना मिलती है। गौतमी जब यह स्पष्ट करती है -

" सिध्दीयाँ तो उनके पदोंपर प्रणत हैं,
स्वामी आज आनन्दाग्रगामी शुध्द बुध्द है । "

यशोधरा उनका साथ त्यागकर जीवित रहने के विषयमें सोच भी नहीं पाती क्योंकि वह अपने स्वामी के साथ अपना जन्म-जन्मातर का सम्बध स्वीकार करती है । तभी उसीवक्तही राहुल दौडा आता है और यशोधरा को महाराज शुध्दोदन और राजमाता महाप्रजावती के आगमन की सूचना देता है वे उसकी साधना को सावित्री के समान अध्यात्मिक कठिन बताते हुए कहते है कि सिध्दार्थ को उसी के बल से कृतकृत्यता उपलब्ध हुई है ।

महाराज शुध्दोदन गोपासे सिध्दार्थ के पास चलने को प्रस्तुत होने के लिए कहते हैं, किन्तु गोपा यह कहकर उनकी आज्ञा को शिरोधार्य नहीं कर पाती कि -

" किन्तु तात । उनका निदेश बिना पाये मैं,
यह घर छोड कहाँ और कैसे जाऊँगी?"

महाराज शुध्दोदन अधिक जोर देनेपर यशोधरा मुर्च्छित हो जाती है । इस समयमें यशोधरा इस विचिकित्सा में ग्रस्त हो जाती है, कि कपिलवस्तु पधारनेपर, जब सिध्दार्थ मेरे द्वारपर भिक्षार्थ आयेंगे तो मैं उन्हें क्या समर्पित करूँगी । वह अपने वैष्णव संस्कारोंका परित्याग करने को उदयत नहीं है ।

गौतम बुध्द को मगधसे कपिलवस्तु बुलाने के लिए बहुत से पुरुष भेजे जाते है, किंतु जब वे भी लौटकर नहीं आते तो यशोधरा इस चिंता में मग्न हो जाती है कि उनके लिए तो पराये लोग भी अपने ही है जब की हमारे लिए हमारे अपने भी पराये होते जा रह है । इसके बाद राहुल स्वयं पिताको लाने जाना चाहता है परंतु यह सोपकर नही जाता कि मेरी अनुपस्थितिमें जननी को कष्ट होगा । राहुल अबोधों के समान कह उठता है कि तुम मेरा विवाह क्यों नही कर देती जिससे मेरी पत्नी आपके पास रहे और मैं पिता के समीप उन्हें बुलाने चला जाऊँ ।

यशोधरा अपने मन का इतना संयमन कर लेती है कि गौतम बुध्द के दर्शनार्थ वह अपने भवन का त्याग करके बाहर नहीं जाती और गौतम को ही उसके द्वारपर आना पड़ता है । यशोधरा स्वपति को आया देखकर हर्ष-विव्हल होकर गा उठती है -

" पधारो भव भव के भगवान ।
रख की मेरी लज्जा तुमने, आओ अब भवान ।"

जब सिध्दार्थ यशोधरा के समक्ष नारी जाति की महत्ता का बखान करते है, तो उसकी समस्त ग्लानि और विषाद मिट जाती है ।

12823
A

राष्ट्रकवि गुप्तजीने यशोधरा के माध्यम से नारी के अन्त: सम्बधों को भी उजागर करने का प्रयास किया है ।

" गुप्तजी की काव्यकृति यशोधरा गीतिकाव्योन्मुख है । वियोगिनी की विरहवेदना का संचार गहरी अनुभुति और भावावेश के कोमल व्यापारों की सूक्ष्म अभिव्यंजना गुप्तजी के गीतों की विशेषता है । भाषा की व्यंजकता, सुकुमारता और सरलता के कारण गीत अत्यंतिक सुन्दर बन पडे है । तुक की अति के कारण गीतों में लय और प्रवाह का अभाव है ।"[१]

१] मिनलव्दारका प्रसाद - मैथिलिशरण गुप्त का साहित्य - पृ. २५८

कथावस्तु की विशेषताएँ -

" यशोधरा" कृति मैथिलीशरण गुप्तजीव्दारा लिखे गये काव्य ग्रन्थो में अपने ढंग का अकेला काव्य है । इस काव्य में पति-विरह और नारी की गौरवमयी सहनशक्ति तथा मधुर प्रेम भावना का अंकन है । यशोधरा में वात्सल्य का समावेश है । यशोधरा नायिकाप्रधान और लघुकाव्य है उनका कथानक क्षीण है, उसकी दृश्य घटनाएँ महाभिनिष्क्रमण से, कपिलवस्तु - आगमन तक ही सीमित है । इस काव्य में यशोधरा और सिध्दार्थव्दारा त्याग दिखाया है । यशोधरा काव्य में एक उपेक्षित चरित्र के उध्दार का प्रयत्न कवि व्दारा हुआ है और इसमें यशोधरा का चरित्र दु:ख, वियोग, करुणा, स्वाभिमान, वात्सल्य आदि क्षेत्र में महान रहा है । यशोधरा काव्य विप्रलम्भ शृंगार प्रधान काव्य है । इस काव्य की प्रमुख विशेषत: सुन्दर और सफल पारिवारिक वातावरण उपस्थित करना है । और पति के प्रति अपने कर्तव्य जानना। "यशोधरा" में यशोधरा के दु:ख की व्यंजना और वैष्णव सिध्दांतोकी स्थापना ही मुख्य उद्देश्य रहा है । इस काव्य का कथानक का ढाँचा स्पष्टता बौध्द ग्रन्थों के आधारपर खडा किया गया है । यशोधरा में प्राचीन विचार, नयी शैली देने का प्रयत्न कविव्दारा हुआ है । "यशोधरा" विशुध्द खडी बोली में सृजित है, और भाषा परिमार्जित है । कथा का सारा पूर्वार्ध इतिहास प्रसिध्द है, उसका उत्तरार्ध कवि की अपनी उर्वर कल्पना की सृष्टि है । इस काव्य में आशा और जीवन को स्फूर्ति प्रदान करने की क्षमता है । "यशोधरा" में यशोधराके वात्सल्यरस से पुर्ण गीत सूर के बालवर्णन के पदों की स्मृति को जाग्रत कर देते है ।

"यशोधरा" काव्य में चरित्र चित्रण

किसी भी घटना का कर्ता अथवा भोक्ता चरित्र कहलाता है। काव्य में चरित्र हो तो वह कुछ न कुछ करेगा ही, और काव्य में कोई घटना हो तो निश्चित रूपसे उसके करने या भोगनेवाला पात्र होगा। लेकीन खण्डकाव्य में चरित्र के एक अंश का ही प्रतिपादन होता है। उसमें कहानी एवं एकांकी के समान ही व्यक्तित्व की केवल एक झलक दिखाई जाती है फिर भी चरित्र चित्रण खण्डकाव्य का अनिवार्य तत्त्व है।

व्दिवेदी युग आदर्श प्रधान चरित्रों की सृष्टि में अग्रणी रहा है। व्दिवेदी युग के कवि अतीतोपजीवी हैं। अतीत के आदर्श का ग्रहण इनका लक्ष्य है तथा अतीत की विकृतीयों को सुधारने का इनका उद्देश्य रहा है। इस व्दिवेदी युग के अधिकांश कवि इतिहास- पुराण की और टकटकी लगाये रहे हैं।

मैथिलीशरण गुप्त पुरुषों के चरित्र की अपेक्षा नारियों के चरित्र चित्रण में अधिक रमे है। क्योंकि नारियाँ ही समाज तथा संस्कृति का मूल आधार है। अपने पात्रों का चरित्र - चित्रण करने में गुप्तजी बहुत संवेदनशील हैं। उन्हें " मानव-सम्बधों का कवि "[१] डॉ. नगेद्रने इसी कारण माना है कि वे किसी का दु:ख नहीं देख सकते है। गुप्तजी के खण्डकाव्यों में कई पात्र कल्पित कुछ काव्यजगत् के लिए अपरिचित किंतु कुछ चिरपरिचित हैं। गुप्तकृत खण्डकाव्यों के अधिकांश पात्र चिर प्रसिध्द है। काल्पनिक कथानकों एवं पात्रों की ओर गुप्तजी की रुचि नहीं है। प्राचीनता के प्रति उनके मनमें अपार श्रध्दा है। अपनी बात भी आज के युग की बात भी, वे उसी के माध्यम से कहना पसंद करते हैं।

१] सं.वीरेन्द्रकुमार बडसुवाला - यशोधरा काव्यसंदर्भ, पृ.१४५

...BALASAHEB KHARDEKAR ... SHIVAJI UNIVERSITY ...

यशोधरा एक चरित्र प्रधान काव्य है । वस्तुत: इस कृति की रचना ही उपेक्षिता यशोधरा के चरित्र को उँचा उठाने के लिए हुई है । यशोधरा पात्र बहुल कृति नहीं है अपितु प्रधान पात्र यशोधरा ही है, जबकी सिध्दार्थ, राहुल, शुध्दोदन, महाप्रजावती, छन्दक, गौतमी आदि उसके गौणपात्र हैं । यशोधरा एक चरित्रप्रधान कृति है । यशोधरा के परम्परागत चरित्र में यदयपि उसकी महत्ता और त्याग के बीच सुरक्षित है । रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सर्वप्रथम प्राचीन युग के उपेक्षित पात्रों की ओर ध्यान आकर्षित किया और महावीर प्रसाद व्दिवेदीजीने "उर्मिला" जैसे उपेक्षित पात्रों की ओर ध्यान खींचा । फलत: उपेक्षित की खोज होने लगी इसी प्रवृत्ति का परिणाम यशोधरा का चरित्र-चित्रण है ।

१] <u>यशोधरा</u> :

"यशोधरा" नामकरण से ही स्पष्ट है कि यह नायिका प्रधान रचना है । अत: यह सहज ही विश्वास किया जा सकता है कि कृतिकारने उसी के चरित्र-चित्रणपर विशेष बल दिया होगा । कृति के आधारपर यशोधरा के चरित्र की विशेषताओंपर प्रकाश पडता है ।

१. <u>यशोधरा का प्रेयसी रूप</u> :

यशोधरा के हृदय में सिध्दार्थ के गुणों की चर्चा सुनकर अनुराग उत्पन्न हो गया था । सिध्दार्थने यशोधरा के हृदयमें श्रवणों के मार्ग से प्रवेश किया था -

" प्रियतम । तुम श्रुति पथ से आये । "

यशोधरा सिध्दार्थ की अनुरागिनी थी, परन्तु लज्जालु होने के कारण उसने उस प्रेम-भावना को किसी से व्यक्त नही किया था । यशोधराने सिध्दार्थ को अपने हृदय में स्थान देकर अपने अधर-रूपी कपाटों को बन्द कर लिया था, जिससे न तो वे निकल सकें और न उसके मुख सेही उनके विषय में

कोई शब्द निकल सके -

" तुम्हें हृदय में रखकर मैंने अधर-कपाट लगाये । "

यह यशोधरा की सिध्दार्थ के बारे में अनुराग भावना ही थी, कि उसे अपने पिताव्दारा उसका सिध्दार्थ से विवाह करने से पूर्व शास्त्र - संचालन, अश्वारोहण आदि की परीक्षा लेना प्रतीत नही हो रहा था । यशोधरा अपने पिता की उस हठ का उल्लेख करते हूए उसके मुख से निकले "हाय" शब्द से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है -

" मेरे लिए पिताने सबसे धीर-वीर वर चाहा,
आर्यपुत्र को देख उन्होंने सभी प्रकार सराहा ।
फिर भी हठकर हाय । वृथा ही उन्हें उन्होंने थाहा,
किस योध्दाने बढकर उसका शौर्य - सिन्धु अवगाहा१"

२. यशोधरा का पतिव्रता रूप :

"यशोधरा" काव्यमें यशोधरा के इसी स्वरूप का सर्वाधिक अंकन मिलता है । यशोधरा के विवाह को अभी दो डेढ वर्ष ही व्यतीत हो पाता है कि दैव-दुर्विपाक से सिध्दार्थ यशोधरा को सोती छोडकर गृहत्याग कर चले जाते है । यशोधरा को शोक होता है उसे समस्त विश्व ही शून्य प्रतीत होने लगता है । यशोधरा एक सच्ची पतिव्रता नारी है अत: यह निश्चित होने से पूर्व ही कि सिध्दार्थ अब लौटकर नहीं आयेंगे, वे सखी से अपना शृंगार कराना स्थगित कर देती है और उससे कह उठती है -

" कह आली क्या फल है,
भाव तेरी उस अमूल्य सज्जा का१
मूल्य नहीं क्या कुछ भी,
मेरी इस मन लज्जा का१"

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

यशोधरा को छन्दकव्दारा लाए संदेश से समझता है कि सिध्दार्थ तभी लौटकर आयेंगे जब उन्हें सिध्दि लाभ हो जायेगा, और उन्होंने अपने शीश के केशों को काटकर तथा वस्त्राभरणों को त्यागकर भूत रमाली है तो यशोधरा भी वैसा ही आचरण करती है । यशोधरा अपनी सखीसे कैंची मँगाती है और अपने सुदीर्घ - सुचिक्कण केशों का तिरस्कार करती है और काट देती है ।

जब महाराज शुध्दोदन उसे यह कहकर मर्माहत करने का प्रयास करते हैं । कि तेरा यह गर्व और मान कि सिध्दार्थ को खोजकर लाना उसकी इच्छा के प्रतिकूल रहेगा, उचित नहीं है तो यशोधरा स्पष्ट कर देती है कि मैं प्रणय-कोप के कारण नहीं कह रही हूँ अपितु यह मेरे पत्नीव्रत धर्म की माँग पर अद्भुत है -

" धर्म लिए नाता मुझे आज उसी ओर है । "

यशोधरा की प्रथम इच्छा अपना जीवन समाप्त करने की थी, परन्तु वह शीघ्र ही यह सोचकर उस विचार को त्याग देती है कि प्रियतम मेरे सिरपर राहुल की देख रेख का उत्तरदायित्व डाल गये हैं, अत: मुझे नाना कष्ट सहकर भी उनके प्रत्यागमनतक उनकी थाती राहुल की देखभाल करनी है, अन्तत: उसको उन्हें समर्पित कर देना है -

" स्वामी मुझको मरने का भी दे न गए अधिकार
छोड गये मुझपर अपने उस राहुल का सब भार । "

यशोधरा को यह निर्णय लेने में भी देर नही लगती कि सिध्दार्थने मेरा बिना कहे - सुने परित्याग करके और सिध्दि हेतु जाकर मेरी यह परीक्षा लेनी चाही है कि उनकी अनुपस्थिति में भी अपने कर्तव्य भार का

निर्वाहण कितनी दक्षता और क्षमता से करती हूँ? और वह तदर्थ कमर कसकर सन्नध हो जाती है । " यशोधरा का पत्नीत्व, भोगविलासी न होकर पति के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देने की भावना से अनुप्रणित है । यही कारण है कि सिध्दार्थव्दारा उससे बिना कुछ कहे सुने ही चले जाने पर वह अपना कर्तव्यपथ स्वयं सुनिश्चित कर लेती है ।"[१]

३. <u>यशोधरा का मानिनी रूप</u> :

"यशोधरा" में जितनरह यशोधरा का जननी रूप है, उसीतरह मानिनी रूप भी है । बुध्द जब मगध आ गए है उस समय शुध्दोदन और महाप्रजावती यशोधरा को पति के दर्शन के लिए प्रस्तुत हो जाय ऐसे कहते है परन्तु यशोधरा प्रस्तुत नहीं क्योंकि वह समझती है कि अपने पति का साथ नहीं छोडा है । पति ही घर छोडकर गए है, अत: उन्हें ही पास आना पडेगा। जब शुध्दोदन और महाप्रजावती उससे मगध चलने का आग्रह करने जाते है तो मानिनी यशोधरा आवेश में आकर मूर्च्छित हो जाती है ।

जब बुध्द कपिल वस्तुमें पधार चुके है, किन्तु यशोधरा अब भी वही बैठी है जहाँ वह उसके प्रियतम सिध्दार्थ छोडकर गए है । वह समझती है कि जब उन्हें इष्ट होगा तब वे आकर अपने चरणों मे स्थान देंगे । इसीतरह ही होता है स्वयं बुध्द को अपनी मानिनी के व्दारपर आना पडता है । और कहना पडता है –

मानिनी, मान तजो, लो, अब तो रही, तुम्हारी बात ।

१] प्रो. कृष्णामोहन अग्रवाल – "गुप्तजी और उनकी यशोधरा– पृ. ५७

भगवान बुध्द के मुख से उक्त वाक्य सुनकर मानिनी यशोधरा का मान विगलित हो जाता है और वह अपने को कृतकृत्य अनुभव करने लगती है । "यशोधरा" काव्य में यशोधरा का जो मानिनी रूप है उसकी समीक्षा करते हुए डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद ने लिखा है - " गुप्तजीने यशोधरा के मानिनी रूपमें एक अभिनव चरित्र की सृष्टि की है, जो आधुनिक काव्य साहित्य की अपूर्व देन है । यशोधरा के इस रूप का वर्णन न एडविनकृत "बुध्दचरित्र में हुआ है और न अनुप शर्मा कृत"सिध्दार्थ " महाकाव्य में । नारी के इस रूप के चित्रण में कवि के वर्तमान युग के नारी आन्दोलन का प्रभाव पडा है । यदयापि गुप्तजीने युग-युग की उपेक्षिता नारी के चरित्र को शुध्द और पवित्र कर एक अभिनव रूप दिया है तथापि उसकी अंतरात्मा के संस्कार प्राचीन नारियों के आदर्श हैं । "साकेत" की कैकयी और उर्मिला का चरित्र-चित्रण भी इसीतरह का हुआ है । कवि के समस्त नारी - चरित्रों में यशोधरा के चरित्र की सृष्टि उसकी मौलिकता की परिचायक है । मानिनी और अनुरागिनी नारी का इतना सुन्दर और संतुलित रूप मैंने न तो कहीं देखा है और न कही पढा है, न प्राचीन ग्रन्थों में, न आधुनिक साहित्य में । "[१]

४. <u>यशोधरा का विरहिणी रूप</u> :

पति - प्रेम विव्हलता यशोधरा का यह अन्य सती साध्वी विरहिणी नारियों से सादृश्य रखता है । चूँकि यशोधरा को पति के रूपमें पाने की आशा नहीं रह गई थी अत: उसका विरह अत्याधिक करुणरूपमें प्रस्तुत किया गया है । यशोधरा बुध्द के दर्शन की इच्छुक है, संन्यासी रूपमें ही पति को पाकर वह सन्तुष्ट हो जाती है। पति के यश और गौरव के प्रकाश में वह गौतम के विलासी जीवन की स्पृहा नहीं करती और न नारी

१] प्रो. श्याम मिश्र - यशोधरा की टीका - पृ. ६३

सुलभ दुर्बलता का ही प्रदर्शन करती है । विरहावस्था के संयम उच्च विचारशीलता और तपस्याने दिव्य बना दिया । अत: वह सामान्य नारी के भावनाओंसे बहुत उपर उठ जाती है । परन्तु इस उच्चता की प्राप्ति सहसा नहीं दिखाई गई, उसका क्रमश: विकास दिखाया गया है । अत: उसका अन्तिम रूप स्वाभाविक और स्तुत्य ही महिमामय है । यशोधरा अपने विरहकाल को भी हँसगाकर व्यतीत कर देती है ।

५. यशोधरा का नारी जाति का प्रतिनिधि रूप :

यशोधरा काव्य में यशोधरा की ऐसी उक्तियाँ भी मिलती है जहाँ वह सिध्दार्थ पत्नी के स्थानपर समक्ष नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है जैसे यशोधरा के अंतर्मन का चीत्कार इन शब्दों में अभिव्यक्त हुआ है -

" अबला जीवन हाय । तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखो में पानी । "

नारी को सिध्दि मार्ग की बाधा मानना कहाँ तक उचित है । यदि उसे बाधा माना ही जाता है तो फिर उसके जीवन का महत्व ही क्या रह जाता? दुनियामें आधी जनसंख्या नारी जाती की है, तो क्या इससे यह अभिप्राय ग्रहण किया जाय कि विश्व की जनसंख्या के अर्ध्दांश की भावनाओं और विचारोंका कुछ महत्व ही नहीं है ।

सिध्दि मार्ग की बाधा नारी, फिर उसकी क्या गति है?
पर उनसे पूछूँ क्या, जिनका मुझसे आज विरति है ।

भारतीय नारी की निरीहता, विवशता, दयनीयता और लाचारी का सजीव खाका यशोधरा में अभिचित्रित हो पाया है ।

६. यशोधरा का मातृरूप :

यशोधरा को पति के प्रत्यागमन की कोई निश्चित अवधि नहीं है, किंतु उसकी गोद में राहुल तो है । यशोधरा की वह उक्ति उचित ही है कि मैं दरिद्र नही हूँ, क्योंकि मेरी मलिन - गुदडी में राहुल जैसा लाल विद्यमान है -

" मेरी मलिन गुदडी में भी है राहुल सा लाल । "

यशोधरा राहुलजननी है । त्व पतिविषयक कर्तव्य समझती है, इसीतरह त्वपुत्रविषयक कर्तव्य भी समझती है। यशोधरा को पतिआज्ञा की प्रेरणा भी मिलती है ।

" स्वामी मुझको मरने का भी देन गये अधिकार
छोड गये मुझपर अपने उस राहुल का सब भार ।"

यशोधरा भगवान से याचना करती है कि उसे राहुल के क्रिडा-कलाप देखने का सुअवसर सदैव उपलब्ध होता रहे, जिससे उसकी विरहव्यथा परिशान्त होती रहे -

" दैव बनाये रक्खे,
राहुल बेटा, विचित्र तेरी क्रिडा ।
तनिक बहल जाती है
उसमें मेरी अधीर पीडा - क्रिडा । "

७. यशोधरा का सुखी गृहिणी रूप :

" यशोधरा " काव्यमें यशोधरा के चरित्र के इस रूप का मनोरम अंकन मिलता है । विवाह के बाद यशोधरा का गृहस्थ जीवन बडा सुखमय था। यशोधरा और सिध्दार्थ दोनों रोहिणी नदी के किनारे जाते थे,

जहाँ यशोधरा मछलियों तथा पशु-पक्षियों के लिए चुग्गा लिए रहती थी और सिध्दार्थ उससे... चुग्गा ले लेकर मछलियों और पशु-पक्षियों को चुगाया करते थे -

" रोहिणी हाय । यह वह तीर,
बैठने आकर जहाँ वे धर्मधन धृतधीर।
मैं लिए रहती विविध पकवान खीर,
वे चुगाते मीन, मृग, खग, हँस, केली कीर ।"

अपनी संयोगावस्थामें सिध्दार्थ और यशोधरा कुँज-कुटीरों में आनन्द लाभ किया करते थे ।

कवि गुप्तजीने यशोधरा काव्यमें गृहस्थ-जीवन के विविध पक्षों का सुन्दर उद्‌घाटन किया है । इस काव्य में दाम्पत्य जीवन, सासश्वसुर तथा बहु के सम्बन्ध परिवार में भृत्य वर्ग की स्थिति आदिपर अच्छा प्रकाश डाला गया है । " यशोधरा के चित्रण में गृहिणीं के आदर्श का सुन्दर निरूपण है, परन्तु न तो इसका काव्य - विधान ही व्यवस्थित है - कहीं गीत, कहीं नाटय, कहीं गदय जुड़े हुए है, और चरित्रनिर्देश की रेखाएँ ही पुष्ट है । सारा आख्यान एक करूण सात्विक और सजीव भावना का निर्देश मात्र करता है। नारी के व्यक्तित्व निर्माण की अपेक्षा करूणा का प्रभाव ही प्रमुख बन गया है ।"[१]

"संक्षेप में कहा जा सकता है कि यशोधरा का चरित्र पर्याप्त प्रभावशाली रूपमें अंकित हुआ है। उसमें भारतीय नारीयोंके पुरातन आदर्शोंका परिपालन करने की प्रवृत्ति की ही प्रबलता है, तथापि वह यत्र तत्र -

---

१] सं. वीरेन्द्रकुमार बडतुवाला - यशोधरा काव्यसंदर्भ- पृ.१५३

आधुनिक नारियों के समान स्त्री जाति के लिए समानधिकारों की भी माँग करती है । यशोधरा का पतिव्रत्य स्पृहनीय है उसकी मानभावना नारी वर्ग के लिए अनुकरणीय है, साथ ही पति को परमेश्वर मानते हुए उसके लिए सर्वस्व न्योछावर करने की तत्परता भारतीय संस्कृतिकी दृष्टि से वंदनीय है । "[१]

२] <u>सिध्दार्थ</u> :

"यशोधरा" काव्य में दूसरा प्रमुख पात्र सिध्दार्थ है । सिध्दार्थ प्रारम्भ से ही चिन्तनशील थे । सिध्दार्थ के पिता शुध्दोदनने अपने राजमहलमें सिध्दार्थ की सुख - सुविधा के समस्त उपकरण एकत्र रखे थे । शुध्दोदन का निरन्तर यह प्रयास रहता था कि सिध्दार्थ की दृष्टि दु:ख, कष्ट आदि अशोभन दृश्योंपर न पडे । सिध्दार्थ का विवाह यशोधरा के साथ होता है बादमें राहुल नामक पुत्र प्राप्त होता है, क्रमश: रोगी, वृध्द और मृत व्यक्ति को देखकर सिध्दार्थ को संसार से विरक्ती हो गई । सिध्दार्थ अर्ध्दरात्रिमें पत्नी-पुत्र को सोते छोडकर गृहत्याग करना अनवरत साधना के उपरान्त अमृततत्व की उपलब्धि और उसका विचार यही उनके परम्परागत चरित्र की विशेषताएँ हैं । और इन्ही को गुप्तजीने भी काव्यबध्द किया है । विवेचन सौंदर्य की दृष्टि से उनके इस चरित्रांकन को निम्नांकित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है ।

१] <u>सिध्दार्थ का पतित्व</u> :

सिध्दार्थ के हृदयमें वैराग्य भावनाओं का उद्रेक बाल्यकाल में ही हो गया था, किंतु उनमें भी यह मानव सुलभ दुर्बलता थी कि अपना हृदय यशोधरा को दे बैठे थे, और उसकी पत्नी रूपमें प्राप्त करने के लिए तदर्थ

१] प्रो. कृष्णमोहन अग्रवाल - गुप्तजी और उनकी यशोधरा - पृ.७१

अवश्यक परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त कर दिखायी थी । यशोधरा के इस कथन से कि -

" सभी सुन्दरी बालाओं में मुझे उन्होंने माना । "

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सिध्दार्थने यशोधरा को उसकी समवयस्का कुमारियों में से चुना था । सिध्दार्थ शान्त स्वभाव के थे उनकी वृत्ति अहिंसामयी थी वे सांसरिक विषय भोगोंसे विरक्ति रखते थे, किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि उन्होने राजकुमारोचित शिक्षा ग्रहण करने में असावधानी की हो । सिध्दार्थ सुप्रसिध्द अश्वरोही और शरसंचालक थे । यशोधरा के विवाहार्थ होनेवाली प्रतियोगिता के विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने तदर्थ आये सभी प्रतियोगियों को परास्त करके यशोधरा से विवाह का सौभाग्य प्राप्त किया था ।

पति के रूपमें यह भी सिध्दार्थ के चरित्रोदात्त का सुचक तथ्य है कि यद्यापि वे सांसरिक माया- मोहसे विमुक्त और शुध्द-बुध्द ज्ञानात्मा के रूप को प्राप्त हो चुके है फिर भी वे स्वपत्नी की मान - भावना और मर्यादा की रक्षा हेतु उसके गृहव्दार जाकर कहते है -

" मानिनी मान तजो लो, रही तुम्हारी बान ।
दानिनि आया स्वयं व्दारपर वह तव तत्र भवान ।"

२. <u>सिध्दार्थ का वैराग्योन्मुख रूप</u> :

"यशोधरा" के आरम्भ में ही वीतरागी गौतम का चिंतनमय रूप उभरता है । सिध्दार्थ को ज्ञान होता है कि जन्म-मृत्यु का चक्र चल रहा है ।

संसार के दु:खों में आदमी पिसता रहता है । वे भवसागर चक्रसे परित्राण पाने का उपाय सोचते है। उन्हें यशोधरा देखकर ध्यान आता है कि रूप - सौन्दर्य की ललकसे युक्त यशोधरा भी वृध्दा होगी, उसका यौवन जलकर मिट्टी हो जायेगा । यहींपर उन्हें एक महान सत्य से आत्म साक्षात्कार होता है " मरने को जग जीता है ।" इस संसार की सार्थकता क्या है । यह अनुभवगम्य सत्य ही उन्हें प्रेरित करता - बहूजन हिताय । उसी समयही सिध्दार्थ गृहत्याग करते है ।

३. <u>सिध्दार्थ का विश्व- कल्याणकांक्षी रूप</u>:-

गौतम बुध्द की साधना का उद्देश्य आत्मोध्दार भी था, किन्तु उन्हें अपनी आत्मा के उद्धार की उतनी चिन्ता दृष्टिगत नही होती, जितने कि वे विश्वकल्याण के अभिलाषी मिलते है । महाभिनिष्क्रमण के समय ही वह समस्त विश्ववासियोंको यह समाश्वासन देते दृष्टिगोचर होते है -

" भुवन - भावने आ पहुंचा मैं,
अब क्यों तू यों भीता है?
अपने से पहले अपनों की,
सुगति गौतमी गीता है । "

इसीप्रकार सिध्दार्थ स्पष्ट कर देते है कि मैं विश्व के त्रिविध तापों का समूलोच्छेदन करके विश्व में कल्याण हेतु फहराना चाहता हूँ ।

महाराज शुध्दोदन के इस कथन से भी यही भाव व्यक्त हो रहा है कि गौतम बुध्द जगत - कल्याण में अनुरत है -

" झूठे सब नाते सही, तू तो जीव मात्र का,
जीव दया - भाव से ही हमको उबार जा ।"

४. <u>सिध्दार्थ का साधक रूप</u> :

सिध्दार्थ के साधक रूप के दर्शन वहीं से होने लगते है जब वे गृहनिष्क्रमण के पश्चात अपने केशों को काट डालते है और राजसी वस्त्राभरणों को त्यागकर शरीरांगोंपर रज मल लेते है –

" हाय । काट डाले वे केश ।
चिकने – चुवडे, कोमल – कच्चे, सच्चे, सुरभि – निवेश । "

राज्यपाट, पत्नीपरिजन आदि का मोह त्यागना सच्चे साधक केही बूते की बात है, जिसे सिध्दार्थ कीर के कागदों की भांति त्याग देते है।

सिध्दार्थने साधक के रूपमें कितनी कठिन तपस्या की थी, इसका परिचय यशोधरावद्वारा उनकी स्वप्न में देखी गयी दशासे चल जाता है, जिसमें उसे उनका शरीर सूखकर काँटा हुआ दृष्टिगत होता है –

" दया भंरी पर शोणित सूखा,
वर्ण भ्रमँवरा होकर रूखा,
पैठा पेट पीठ में भूखा,
आया मुझे विलपता । "

निष्कर्ष रूपमें कहा जा सकता है कि सिध्दार्थ का चरित्र प्रस्तुत काव्य में एक महान चिन्तक सत्य के खोजी और नारी – महत्ता को स्वीकार करनेवाले के रूपमें चित्रित हुआ है ।

३] राहुल :

"यशोधरा" में राहुल को गुप्तजीने सिध्दार्थ के बराबर महत्त्व प्रदान किया है, राहूल अपनी अटपटी बातोंसे कभी दार्शनिको जैसी जिज्ञासाओंसे, कभी माँ यशोधरासे नाना प्रकार के हठ करके, उसके विरहकाल का अनन्य साथी सिध्द होता है । राहुल का चरित्र यशोधरा के व्यक्तित्व का पूरक है । कवि गुप्तजी उसी को माध्यम बनाकर मातृत्व रूप का विस्तार से अंकन कर सके । " वह पिता की प्रतिकृति है और माता की छाया है । वह पिता के प्रति श्रध्दालु है और मातासे स्वभवत: प्रभावित होता है उसके अभाव में यशोधरा का मातृत्व, अविकसित रह जाता और कथा वस्तु स्थिर हो जाती ।"[१]

राहुल का दुर्भाग्य ही है कि वह जब तक एक अबोध शिशु है राहुल के पिता सिध्दार्थ उसे यह कहकर छोडकर चले जाते है -

" राहुल मेरे ऋण मोक्ष माप ।
लाऊँ मैं जब तक अमृत पाप,
माँ ही तेरी माँ और बाप,
दूल, मातृ - हृदय के मृदुल दाम । "

किसी शिशु का इससे अधिक दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि उस उसके पिता छोडकर चले जाये और उसके रोने पर उसकी माता उसे यह कहकर डपरे -

" चुप रह, चुप रह, हाय अभागे ।
रोता है अब किसके आगे?

१] सं. वीरेन्द्रकुमार बडथ्वाला - यशोधरा काव्य - संदर्भ- पृ.१५३

माँ व्दारा यह कहकर डपटा जाने पर भी, उसे शीघ्र ही उसका स्नेह दुलार उपलब्ध हो जाता है ।

राहुल को आँगन में परछाई दिखायी देती है और वह स्व माता से प्रश्न करने लगता है कि अभी अभी आँगनमें कोई मेरे साथ घूमता फिर रहा था किन्तु मेरे अलिन्द में आते ही, न जाने वह कहाँ छिप गया है? और - यशोधरा को यह कहकर उसका समाधान करना पडता है कि वह तेरा प्रतिबिम्ब था, तुझे उससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है ।

राहुल स्वमाता की विरह वेदना समझने लगता है, और चाहता है कि यदि मेरे पंख होते तो पिताजी के पास पहुंच जाता और उनसे घर लौटने का आग्रह करता, जिसे वे टाल नहीं पाते -

" मेरी बात मानते है मान्य पितामह भी
मानते अवश्य उसे टालते न वह भी । "

जब उसे यशोधरा से मालुम होता है कि पंखो के अभाव में भी मनुष्य योगबल से उसी प्रकार उड सकता है जैसे हनुमान उडे थे, तो यह न सोचता हुआ कि मेरे कथन का माता के हृदय पर क्या प्रभाव पडेगा, कहने लगता है -

" मैं भी योग साधना करुंगा अम्बा, कलसे । "

राहुल में जहाँ विविध तथ्यों के समझने की जिज्ञासा है । राहुल किसी के हृदय को दु:खाना अथवा उनमें ईर्ष्या - व्देष की भावना जाग्रत करना नही चाहता, और लम्बी कूदमें सामर्थ्य होते हुए भी इस दृष्टीसे लम्बी छलाँग नही लगाता कि उसके साथियों को उससे दु:ख पहुंचेगा ।

संक्षेप में यह कहना पडता है कि माँ तथा पुत्र के संवादो में भी गुप्तजीने करुण तथा आदर्शवादी विकासही किया है ।

४] शुध्दोदन :

शुध्दोदन कपिलवस्तु के राजा और सिध्दार्थ के पिता है । पुत्र-वियोग से व्यथित वे हमारे सामने आते है । शुध्दोदन ने अपनी वृध्दावस्था में उसका आस्वादन किया । पर जिस प्रकार दशरथ के सभी प्रयत्न राम को वन जाने से रोकने में असफल रहे उसी प्रकार शुध्दोदन के सभी प्रयत्न सिध्दार्थ को सांसरिक वैभव विलासमें उलझाने में असफल रहे । अन्त में शुध्दोदन को दशरथ के समान उन्हे भी वही दृश्य देखना पडा और अपने प्रयत्नोंपर पश्चाताप करना पडा ।

जिस पुत्र को उन्होंने पाला था वह अपने जाने की सुचना देकर भी गया। शुध्दोदनको जब सिध्दार्थ के वनगमन का हृदय विदारक समाचार मिला, पुत्र-धन लुट जाने का संदेश मिला तो शुध्दोदन सांसारिक वैभव को धिकार उठे - " धिक सब राजपाट धन - धाम "

शुध्दोदन को यशोधरा के प्रति पूर्ण सहानुभूति है । सामान्य ससुर की भाँति शुध्दोदन यशोधरा की उपेक्षा नहीं करते है । लेकीन शुध्दोदन यशोधरा के विनय करते वह ही वे गौतम को खोजने का निश्चय टालते है ।

महाराज शुध्दोदन को जब सिध्दार्थ के सिध्दि-लाभ कर चुकने का समाचार मिलता है तो शुध्दोन यशोधरा के भाग्य की सराहना करते है और पुत्र के स्वागत - हितार्थ मगध जाना चाहते है ।

सिध्दार्थ और शुध्दोदन मिलन के आनन्द में वे यशोधरा को नहीं भूलते । यशोधरा की दशा को देख कर शुध्दोदन का हृदय द्रवित हो उठता है । उसके दु:खको देखने में वे अपने को असमर्थ पाते है और सिध्दार्थ को "निर्भय" कह उठते है तथा गोपा के बिना गौतम को भी वे अस्वीकृत करने की प्रतीक्षा करते है ।

सच देखा जाय तो पिता का वह हृदय धन्य है जो पुत्र के लिये इतना व्यथित होता है । इस दृष्टीसे शुध्दोदन का चरित्र संक्षिप्त होता हुआ भी बहुत भव्य है ।

५] महाप्रजावती :

गुप्तने जिस प्रकार "साकेत" महाकाव्य में कैकयी - रामकी विमाता के अभिशाप का पक्षालन किया है, उसी प्रकार "यशोधरा " काव्य में महाप्रजावती - सिध्दार्थ की विमाता का उज्ज्वल चरित्र अंकन किया है । किन्तु महाप्रजावती आदर्श माता के रूपमें दिखायी देती है । उसे अपना पुत्र नन्द और सौत - मायादेवी का पुत्र सिध्दार्थ, दोनों समान है । महाप्रजावती समदर्शिनी माँ है । सिध्दार्थने सांसरिक वैभव को तिलांजली देकर वन को गमन किया महाप्रजावती हरिऔधकी यशोदा की भाँति पागल हो उठती है । सिध्दार्थ को महाप्रजावतीने दूध पिलाकर पाला-पोसा था, इसलिए महाप्रजावती कहती है - मेरे ममत्व की इतनी भी चिन्ता नहीं की जानेसे पूर्व मुझसे बातें तो कर जाता -

" मैंने दूध पिलाकर पाला ।
सोती छोड गया पर मुझको वह मेरा मतवाला । "

महारानी महाप्रजावती की भी, शुध्दोदनके समान सिध्दार्थ के विषय में धारणा है कि वह नादान बच्चा है, अत: न जाने कहां - कहां भटकता फिरेगा? उन्हें यह भी चिन्ता है कि जब मै मरने के बाद सिध्दार्थ की माता के समीप पहुंचूंगी और वे मुझसे सिध्दार्थव्दारा गृहत्याग के कारणों के विषय में प्रश्न करेंगी तो मैं उन्हें क्या उत्तर दूँगी ।

एक ओर तो यशोधरा सिध्दार्थ के दर्शनार्थ मगध नहीं जाना चाहती, तो महाप्रजावती उसे डपरती है तो दूसरी ओर यशोधरा के दु:ख में दु:खी होती है।

मूर्च्छित है हाय। मेरी मानिनी यशोधरा ।

संक्षेप में महाराणी महाप्रजावती का चरित्र एक औसत भारतीय महिला से कही बढकर है इसप्रकार महाप्रजावती का चरित्र-चित्रण कर गुप्तजीने विमाता के चरित्र को आदर्श रूपमें अंकित किया है ।

६] <u>नन्द</u> :

नन्द सिध्दार्थ का भाई है । नन्द का चरित्र भारत के समान सर्वथा आदर्श है । सिध्दार्थ उसके उपर राज्य का भार छोडकर चले गये । नन्द अपने ऊपर सिध्दार्थका अत्याचार समझता है । वह तो राज्य, भाई सिध्दार्थ का ही समझता है और स्वयं को तपस्या का अधिकार कहता है –

राज्य तुम्हारा प्राप्य,
मुझे ही था तप का अधिकार ।

नन्द को यह चिन्ता है कि सुकुमार राहुल किस प्रकार राज्य का भार उठा सकेगा । किंतु नन्द को राज्य और राहुल दोनों सिध्दार्थ की सौंपी हुई भाती है, वह उनकी रक्षा के लिए अपना सब कुछ निछावर कर देगा । किंतु नन्द को यही चिन्ता है कि सिध्दार्थ आकर कब उसका उध्दार करेंगे –

" किन्तु करोगे कब तक आकर,
तुम उसका उध्दार । "

७] <u>छन्दक</u> :

छन्दक सिध्दार्थ का सारथी है । सिध्दार्थ छन्दक को नगर की सीमा से लौटा देते है । सिध्दार्थ को पहुँचाकर वह इसी प्रकार दुखी हो रहा है, जिस प्रकार राम लक्ष्मण, सीता को वन में पहुँचाकर सुमन्त दुखी हुऐ थे छन्दक कहता है –

" कहूँ और क्या भाई ।
आना पडा मुझे, मै आया, मुझको मृत्यु न आई ।

छन्दक यह सोचते है कि सिध्दार्थने राजसीवस्त्र किस प्रकार उतारे व केश काटकर संन्यास ग्रहण किया । छन्दक के सन्देश से कपिलवस्तु के राज-परिजनों तथा पुरवासियो को दु:ख होता है । इसीतरह का दु:ख सुमन्तने राम के वन जाने के सन्देश से दशरथ और आयोध्या वासियों को दिया था ।

यशोधरा काव्य के पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय कवि गुप्तजी भावुक बन गये है । इस चरित्र चित्रण में उनका आदर्शवाद भी आडे आया है । आदर्श में जकडे इन पात्रों में इतिहास-रस कितना ही हो, वर्तमान को प्रेरणा देने की शक्ति लगभग निश्शेष हो गई है । " ये सभी काव्य चरित्र चरित्र की गरिमा प्रदर्शित करने का उद्देश्य रखते हैं । इसलिए इनकी पध्दति आदर्शवादी है । परन्तु यह चारित्रिक गरिमा प्राचीन धीरोदात्त चरित्र प्रणाली की अपेक्षा बहुत कुछ स्वतंत्र है । इनमें पात्रों की भावना तथा उनका व्यक्तित्व अधिक मुखर है । परन्तु यह नया आदर्शवाद सक्रिय और वास्तविक निर्देश के रूपमें व्यक्त न होकर भावनात्मक पध्दतिपर व्यक्त हुआ । "[१]

१] सं. वीरेन्द्रकुमार बडसूवाला - यशोधरा - काव्यसंदर्भ - पृ.१५३